Shodhaamrit, Vol.-2; Issue-2 (July-Dec.) 2025 : Page No.-122-125

शोधामृत

(कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की अर्धवार्षिक, सहकर्मी समीक्षित, मूल्यांकित शोध पत्रिका)

ISSN : 3048-9296 (Online)
3049-2890 (Print)
IIFS Impact Factor-2.0
Vol.-2; issue-2 (July-Dec.) 2025
Page No- 122-125
©2025 Shodhaamrit
https://shodhaamrit.gyanvividha.com

सारिका यादव
शोधार्थी,
प्राच्यसंस्कृत विभाग,
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ.

Corresponding Author :
सारिका यादव
शोधार्थी,
प्राच्यसंस्कृत विभाग,
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ.

सेतुबन्ध महाकाव्य में सेतु अध्ययन

सेतुबन्ध शब्द का अर्थ पुल की बंधाई होता है वह पुल जो लंका पर चढ़ाई के समय राम द्वारा नल, नील तथा वानर सेना द्वारा समुद्र पर बंधवाया था। 'सेतुबन्ध रामेश्वर' हिंदुओं के चार मुख्य धामों में से एक है। रामेश्वरम् प्रसिद्ध सनातन तीर्थ केन्द्र है। राम ने लंका पर चढांई करने से पूर्व भगवान शिव की पूजा की थी। रामेश्वरम् का शिवलिंग राम द्वारा स्थापित शिवलिंग है। तमिलनाडु की अरिचल मुनाई यह वही छोर है जहाँ से रामसेतु का निर्माण आरंभ हुआ था उसी रामसेतु पर होकर राम अपनी सेना सहित लंका पहुंचे थे। आधुनिक समय में कन्याकुमारी और सिंहल के बीच के छिछले समुद्र में स्थान-स्थान पर जो चट्टानें निकली हैं वे ही उस प्राचीन सेतु के चिन्ह बताए जाते हैं। इसी सेतु का सांगोपांग वर्णन सेतुबन्ध महाकाव्य में वर्णित है।

सेतुबन्ध महाकाव्य का **'दशमुखवध'** तथा **'रामसेतु'** के नाम से भी उल्लेख किया जाता है। **'रामसेतु'** नाम का उल्लेख **रामदास भूपति** की टीका **'रामसेतुप्रदीप'** के प्रारंभिक छंदों में वर्णन है –

तद्व्याख्या सौष्ठवार्थ परिपादि कुरुते रामदास स एव।
ग्रन्थ जल्लालदीन्द्रक्षिति पतिवचसा रामसेतु प्रदीपम्।।[1]

रामायण महाकाव्य के अनुसार सीता को बचाने के लिए श्रीलंका पहुंचने के लिए राम व उनकी वानर सेना के द्वारा इस पुल का निर्माण किया गया था। रामसेतु तमिलनाडु के दक्षिण पूर्वी तट पर पंबनद्वीप और मन्नारद्वीप के बीच बनी एक श्रृंखला है। रामसेतु को **आदम का पुल** भी कहा जाता है।

वाल्मीकि रामायण में रामसेतु का उल्लेख किया गया है कि यह सौ योजन लंबा पुल था एक योजन को तेरह से पन्द्रह किलोमीटर का माना जाता है इतनी लंबाई तक पुल का निर्माण एकदम सीधा हो इसलिए कुछ वानर इतनी लंबाई तक रस्सी पकड़कर खड़े थे, इस पुल का नाम **नल सेतु** था।

श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण के अलावा **तुलसीदास कृत रामायण, श्री रामचरितमानस, रघुवंश महाकाव्य, राजतरंगिणी, विष्णुपुराण, स्कंदपुराण एवं अग्निपुराण** में भी रामसेतु का उल्लेख है।

श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण में सेतु प्रसंग –

बभूव तुमुलःशब्दछदा तस्मिन् महोदधौ।
कृतानि प्रथमेवाहा योजनानि चतुर्दश।।[2]

हाथी के समान विशालकाय वानर बड़े उत्साह और तेजी के साथ काम में लगे हुए थे। पहले दिन उन्होंने चौदह योजन लंबा पुल बाँधा।

प्रहटैर्गवसंकाशैस्त्वरमाणैः प्लवड्गनैः।
द्वितीयेन तथा चाहा योजनानि तु विंशतिः।।[3]

दूसरे दिन भयंकर शरीर वाले महाबली वानरों ने तेजी से काम करके बीस योजन लंबा पुल बाँध दिया।

कृतानि प्लवगैस्तूर्ण भीमकायैर्महाबलैः।
अहा तृतीयेन तथा योजनानि कृतानि तु।।[4]

तीसरे दिन शीघ्रतापूर्वक काम में जुटे हुए महाकाय कपियों ने समुद्र में इक्कीस योजन लंबा पुल बांध दिया।

त्वरमाणैर्महाकायैरेकविंशतिरेव च।
चतुर्थेन तथा चाहा द्वाविंशतिस्यापि च।।[5]

चौथे दिन महान् वेगशाली और शीघ्रकारी वानरों ने बाईस योजन लंबा पुल और बाँध दिया।

योजनानि महावेगैः कृतानि त्वरितैस्तु तैः।
पञ्चमेन तथा चाहा प्लवगैः छिपकारिभिः।।[6]

तथा पाँचवें दिन शीघ्रता करने वाले उन वानर वीरों ने सुवेल पर्वत के निकटतम तेईस योजन लंबा पुल बाँधा।

योजनानि त्रयोविंशत्सुवेलमधिकृत्य वै।
स वानरवरः श्रीमान् विश्वकर्मात्मजो बली।।[7]

विश्वकर्मा के बलवान् पुत्र कान्तिमान् कपिश्रेष्ठ नल ने समुद्र में सौ योजन लंबा पुल तैयार कर दिया। इस कार्य में वे अपने पिता के समान ही प्रतिभाशाली थे।

प्रबन्ध सागरे सेतुं यथा चास्य पिता तथा।
स नलेन कृतः सेतुः सागरे मकरालये।।[8]

मकरालय समुद्र में नल के द्वारा निर्मित हुआ वह सुन्दर और शोभाशाली सेतु आकाश में स्वातीपथ अर्थात् छायापथ के समान सुशोभित होता था।

तुलसीदास कृत रामायण में सेतु प्रसंग –

दोहा- अति उतंग तरु शैलगण, लीलहिं लेहिं उठाइ।
आनि देहिं नल नीलकहँ, विरचहिं सेतु बनाइ।।[9]

वानरों के समूह बहुत ऊँचे-ऊँचे पर्वतों और वृक्षों को खेल की तरह ही उखाड़कर उठा लेते हैं और ला-लाकर नल- नील को देते हैं। वे अच्छी तरह गढकर सुन्दर सेतु बनाते हैं।

शैल विशाल आनि कपि देहीं कन्दुकइव नल नील सो लेहीं।
देखि सेतु अतिसुन्दर रचना विहँसि कृपानिधि बोले वचना।।[9]

वानर बड़े-बड़े पहाड़ ला-लाकर देते हैं और नल-नील उन्हें गेंद की तरह ले लेते हैं। सेतु की अत्यन्त सुन्दर रचना देखकर कृपासिन्धु श्रीरामजी हँसकर वचन बोले-

परम रम्य सुन्दर यह धरणी महिमा अमित जाइ नहिं वरणी।
करिहौं इहां शम्भु थापना मोरे हृदय परम कल्पना।।[9]

यह भूमि परम रमणीय और उत्तम है। इसकी असीम महिमा वर्णन नहीं की जा सकती। मैं यहाँ शिवजी की स्थापना करूँगा। मेरे हृदय में यह महान् संकल्प है।

सुनि कपीश बहु दूत पठाये मुनिवर निकर बोलि लै आये
लिंग थापि विधिवत करि पूजा शिव समान प्रिय मोहिं न दूजा।।[9]

श्रीरामजी के वचन सुनकर वनराज सुग्रीव ने बहुत से दूत भेजे जो सब श्रेष्ठ मुनियों को बुलाकर ले आये। शिवलिंग की स्थापना करके विधिपूर्वक उसका पूजन किया फिर भगवान बोले- शिवजी के समान मुझको कोई दूसरा प्रिय नहीं है।

शिवद्रोही मम दास कहावै सो नर स्वप्नेहु मोहिं न भावै।
शंकर विमुख भक्ति चह मोरी सो नर मूढ मन्द मति थोरी।।[9]

जो शिव से द्रोह रखता है और मेरा भक्त कहलाता है, वह मनुष्य स्वप्न में भी मुझे नहीं पाता। शंकर जी से विमुख होकर जो मेरी भक्ति चाहता है, वह नरकगामी, मूर्ख और अल्पबुद्धि है।

रघुवंश महाकाव्य में सेतु प्रसंग –

स सेतुं बन्धयामास प्लवगैर्लवणाम्भसि।

रसातलादिवोन्मग्नं शेषं स्वप्नाय शाडिगणः।।[10]

राम ने खारे समुद्र पर वानरों को लगाकर (प्रेरितकर) पुल बन्धवाया। वह ऐसा प्रतीत हो रहा था मानों विष्णु को अपने ऊपर सुलाने के लिये पाताल लोक से शेषनाग ही ऊपर आ गये हो।

अग्निपुराण में सेतु प्रसंग -

समुद्र उवाच-

नलेन सेतुं बद्ध्वाडब्धौ लंकां व्रज गम्भीरकः।
अहं त्वया कृतः पूर्वं रामोडपि नलसेतुना।।
कृतेन तरुशैलाद्यैर्गतः पारं महोदधेः।
वानरैः स सुवेलस्थः सह लंकां ददर्श वै।।[11]

समुद्र भयभीत होकर श्रीरामचन्द्र जी के पास आकर बोला - 'हे भगवन्! नल के द्वारा मेरे ऊपर सेतु बाँधकर आप लंका में जाइये। प्राचीनकाल में आप ही ने मुझको गहरा बनाया था। यह सुनकर श्रीरामचन्द्र जी ने नल के द्वारा वृक्ष और शिलाखण्डों से सेतु बँधवाया और उसी से वह वानरों सहित समुद्र के पार गये। वहां सुवेल पर्वत पर पड़ाव डालकर वहीं से उन्होंने लंकापुरी का निरीक्षण किया।

सेतुबन्ध महाकाव्य में सेतु प्रसंग : महाकवि प्रवरसेन ने सेतुबन्ध महाकाव्य में सेतु निर्माण का अद्भुत एवं विलक्षण रूप से तत्कालीन चित्रांकन किया है। नल एवं वानरों के सहयोग से सेतु का निर्माण किया गया। सेतु निर्माण के समय मध्य में आने वाली लताओं, शिलाओं, नदियों, पर्वतों जिनमें विन्ध्य पर्वत, मलय पर्वत, मन्दराचल पर्वत, मैनाक पर्वत, महेन्द्रगिरि, कैलाश पर्वत, ह्रियमाण पर्वत, तिमिंगिल पर्वत, गैरिक पर्वत, सुवेल पर्वत एवं पशुओं जिनमें हंस, चमरी गाय, मत्स्य, सर्पों, गजों, सिंहों, मृगों एवं सागर की सजीव स्थिति का चित्रांकन किया गया है।

'सेतुबन्ध महाकाव्य' जैसा कि नाम से ही ज्ञात है सेतु के बांधने की प्रक्रिया जिसका महाकाव्य में विस्तृत रूप से चित्रण किया गया है। नल एवं वानरों द्वारा सेतु के निर्माण की प्रक्रिया निम्न प्रसंगों में दृष्टव्य में है –

अह ते विक्कमणिहसं
दहवअणपआवलड्घणग्गक्खन्धम्।
आढत्ता विरएउं सासअरामजसलञ्छणं सेउवहम्।।[12]

[अथ ते विक्रमनिकषं दशवदन
प्रतापलड्घनाग्रस्कन्धम्।
आरब्धा विरचयितुं शाश्वतरामयशोलाञ्छनं सेतु
पथम्।।]

पर्वतों के लिए आने के अनन्तर वानरों ने सेतुपथ का निर्माण आरम्भ कर दिया। वह सेतुपथ वानरों के विक्रम की कसौटी था। वह सेतुपथ रावण के प्रताप का अतिक्रमण करने में अग्रसैन्य रूप था एवं शाश्वत स्थिर राम यश का चिन्ह था।

सुग्रीव के निर्देशन में नल सेतु का निर्माण करता है निम्न प्रसंग में यही दृष्टव्य है-

तं बन्धसु घोर तुमं सेउं अज्जेअ जाव दूरन्तरिआ।
एक्कं मलअसुवेला होन्तु दुहा अ विअडा
समुद्दद्धन्ता।।[13]

[ततो बधान धीर त्वं सेतुमद्यैव यावदूरान्तरितौ।
एकं मलयसुवेलौ भवतां द्विधा च विकटौ
समुद्रार्धान्तौ ।।]

हे धीर! तुम ऐसे सेतु का निर्माण करो कि एक दूसरे से अत्यधिक दूरवर्ती मलय और सुवेल पर्वत एक हो जाएं तथा समुद्र बायें और दाहिने दो विकट भागों में विभाजित हो जाएं।

सेतु निर्माण का कार्य पूर्ण होगा नल को ऐसा विश्वास है निम्न प्रसंग में यही दृष्टव्य है-

भण्णइ पबंगपुरओ रहुणाहस्स अ पवंगवइ
वीसत्थम्।
तुह सेउबन्धजणिआ ममम्मि संभावणा ण होहिइ
अलिआ ।।[14]

[भणति प्लवंगपुरतो रघुनाथस्य च प्लवंगपते
विश्वस्तम् ।
तव सेतुबन्धजनिता मयि संभावना न
भविष्यत्यलीका ।।]

नल ने विश्वासपूर्वक वानरों, राम एवं सुग्रीव से कहा मेरे विषय में सेतुबन्धजनित अर्थात् सेतु निर्माण की सम्भावना झूठी नहीं होगी अर्थात् सेतु निर्माण का कार्य पूर्ण होगा।

नल दूरदर्शी दक्षता का प्रदर्शन करते हुए सेतु निर्माण का कार्य प्रारंभ करता है जो क्रमशः निम्न प्रसंग में दृष्टव्य है-

त पेक्खसु महिविअलं महिवट्टम्मि व महं
महोअहिवट्ठे।
घडिअं घडन्तमहिहरघडिअसुवेलमलअन्तरं
सेउवहम्।।[15]
[तत्प्रेक्षस्व महीविकटं महीपृष्ठ इव मम
महोदधिमध्ये (पृष्ठे)।
घटितं घटमानमहीधरघटितसुवेलमलयान्तरं
सेतुपथम् ।।]

अतः आप लोग देखिए महीपृष्ठ अर्थात् की सतह के समान समुद्र तल में मेरे द्वारा विस्तृत तथा समरूप से स्थित महीधरों अर्थात् पृथ्वी को धारण करने वाले सुवेल और मलयगिरि को एक में मिलाकर सेतु निर्मित करे देता हूं।

तं मह मग्गालग्गा विरएह
जहाणिओअमुक्कमहिहरा।
अणुवाअदिट्ठदोसं अइराहोन्तसुहबन्धणं
सेउवहम्।।[16]
[तन्मम मार्गलग्ना विरचयत
यथानियोगमुक्तमहीधराः।
अनुपायदृष्टदोषमचिराद्भवत्सुखबन्धनं सेतुपथम् ।।]

वानरों मेरे मार्ग का अनुसरण करते हुए तुम यथा निर्दिष्ट स्थान पर समुद्र में पर्वतों को डालते जाओ ऐसा करने से शीघ्र सुखपूर्वक सेतुपथ निर्मित हो जायेगा। उपाय के अभाव में इसे दुःसाध्य समझ लिया गया है अर्थात् सेतुपथ निर्माण कुछ भी दुःसाध्य नहीं है।

निष्कर्ष : सेतुबन्ध भारतीय संस्कृति और धार्मिक आस्था का अद्वितीय प्रतीक है। रामेश्वरम् से जुड़ा यह प्रसंग मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम की भक्ति, पराक्रम और संकल्प शक्ति को दर्शाता है। नलनील तथा - वानर सेना द्वारा समुद्र पर निर्मित यह सेतु न केवल लंका विजय की भूमिका बना बल्कि मानव जीवन में कठिन परिस्थितियों को सामूहिक प्रयास और श्रद्धा से पार करने का संदेश भी देता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ :

1. सेतुबन्ध, रामसेतुप्रदीप, रामदास भूपति पृष्ठ सं. 2.
2. श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण, युद्धकाण्ड, द्वाविंश सर्ग, श्लोक सं. 68.
3. श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण, युद्धकाण्ड, द्वाविंश सर्ग, श्लोक सं. 69.
4. श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण, युद्धकाण्ड, द्वाविंश सर्ग, श्लोक सं. 70.
5. श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण, युद्धकाण्ड, द्वाविंश सर्ग, श्लोक सं. 71 .
6. श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण, युद्धकाण्ड, द्वाविंश सर्ग, श्लोक सं. 73.
7. श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण, युद्धकाण्ड, द्वाविंश सर्ग, श्लोक सं. 74.
8. तुलसीदास कृत रामायण, लंकाकाण्ड, पृष्ठ सं. 400.
9. रघुवंश-महाकाव्य, महाकवि कालिदास, द्वादशः सर्गः, श्लोक सं. 70, पृष्ठ सं. 109.
10. अग्निमहापुराणम्, कृष्णद्वैपायनमहर्षिव्यासविरचितम्, रामायणेसुन्दरकाण्डे नवमोडध्यायः, पृष्ठ सं. 24.
11. अग्निमहापुराणम्, कृष्णद्वैपायनमहर्षिव्यासविरचितम्, रामायणेसुन्दरकाण्डे नवमोडध्यायः, पृष्ठ सं. 25.
12. सेतुबन्धमहाकाव्यम्- महाकविप्रवरसेन, कृष्णदास अकादमी, वाराणसी, 2012, सेतुबन्धमहाकाव्यम्, सप्तम आश्वास, श्लोक सं. 1.
13. सेतुबन्धमहाकाव्यम्, अष्टम आश्वास, श्लोक सं. 17.
14. सेतुबन्धमहाकाव्यम्, अष्टम आश्वास, श्लोक सं. 19.
15. सेतुबन्धमहाकाव्यम्, अष्टम आश्वास, श्लोक सं. 21 .
16. सेतुबन्धमहाकाव्यम्, अष्टम आश्वास, श्लोक सं. 26.

•